<u>सारांश (Abstract)</u>

ऋतुगेय राग एवं आधुनिक बंदिशों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन

भूमिका

भारतीय संगीत का मूल तत्व राग है। जिसकी परिधि में हमारा संगीत विरास की और अग्रसर है। यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का बीज तत्व है जिसके प्रस्फुरन से यहां का संगीत पल्लवित और पुष्पित हुआ है। यह एक ऐसा निश्चित स्वर समूह है जो स्वर सप्तक में विचरता हुआ रंजकता उत्पन्न करता है और चित्त को प्रसन्नता प्रदान करता है। कला के क्षेत्र में मूल रस का रूप धारण कर गीत और उसके अवयवों द्वारा रस का संचार करता है। इस तरह हम देखते है कि राग संगीत की आत्मा है. संगीत का मूलाधार है। राग के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के मतो का निष्कर्ष निकालने पर हम पाते है कि स्वरों और वर्णों से युक्त रचनाएँ जिनके प्रदर्शन से ही जनचित्त रंजित और आनन्दित हो ऐसा स्वर सौंदर्य हीं राग नाम से प्रसिद्ध है।

प्रत्येक राग निश्चित समय पर गाने पर ही उसका सौंदर्य निखरता है। प्राचीन काल से वर्तमान तक भारतीय संगीत में रागों का गायन अपने निर्धारित समय पर हीं होता आया है। रागों का गायन अपने निर्धारित समय पर ही होता है यह बात हमारे संस्कारों में समायी हुइ है। प्राचीन रागों में तथा वर्तमान रागों में समय सिद्धान्त पर संगीत विद्वानों में मतभेद भी है। राग समय सिद्धांत को आधुनिक काल में भातखंडे जी ने व्यवस्थित रूप देकर उसके महत्व से श्रोताओं तथा गायक वादकों को परिचित कराया है।

मानव की प्रकृति हर ऋतु और हर समय बदलती रहती है। चुंकि राग मानवीय भावना है इसलिये विभिन्न रूप में हर ऋतु और हर समय में मानव को आनन्द प्रदान करती है। प्रचलन में वसन्त ऋतु में हिंडोल राग तथा इसकी रागिनियाँ एवं पुत्रों को गाया जाता है। ग्रिष्म ऋतु का राग दीपक है। पावस का राग मेघ है और शरद का श्री राग है। हेमन्त का मालकौंस तथा शिशिर का भैरव राग है। संगीत के मुर्धन्य विद्वान पंडित दामोदर श्री राग तथा इसकी रागिनियों को शिशिर ऋतु में गाने की बात कहते है, वहीं बसन्त और इसका परिवार वसंत ऋतु में। इसी प्रकार भैरव तथा इसका परिवार ग्रीष्म ऋतु में। मेघ राग तथा उसकी रागिनियाँ वर्षा ऋतु में। इस प्रकार राग तथा इसके परिवार का संबंध विभिन्न ऋतुओं से जोडा गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की महत्वपूर्ण विद्या ध्रुवपद, धमार. ख्याल और ठुमरी है, इन सबमें राग अपने आप में एक पूर्ण इकाइ है जिसे प्रस्तुत करने का सबल माध्यम बंदिश है। शास्त्रीय गायन की परम्परा में विभिन्न गायन शैलियों की असंख्य बंदिशों की रचना हुइ है जो मौलिक रूप से पीढी-दर-पीढी आधुनिक काल तक चलती आयी है।

इस तरह बंदिश राग की आभिव्यक्ति है और उसके संपूर्ण रूप को प्रकट करने का सशल माध्यम भी है। देखने को मिला है कइ अप्रचलित राग केवल अच्छी बंदिश के द्वारा हीं प्रसिद्ध हो गए। भारतीय संगीत के गायन, वादन तथा नृत्य सभी में बंदिश एक प्रमुख तत्व है। प्राचीन काल से हीं बडे-बडे बंदिशकार पैदा हुए जिनकी बंदिशें आज भी खुब लोकप्रिय है। पंडीत भातखंडे और विनायकराव पटवर्धन की रचनाओं में मुख्यतः ऋतु संबंधी वर्णन प्राप्त होते है। ऋतु संबंधित रागों में बंदिश की रचना मुख्यतः गाइ जाती है जिसमें विभिन्न ऋतुओं एवं उसके सौंदर्य का वर्णन मिलता है। साथ ही प्रचार में कुछ एसे भी राग गाये जाते है जिसमें भिन्न-भिन्न ऋतुओं का वर्णन मिलता है। इन सभी रागों में प्रधान ऋंगारिक प्रकृति की ही सर्वत्र दिखती है प्रायः एक सा वर्णन लगभग सभी में देखने को मिलता है।

प्रथम अध्याय : रागों का अर्थ एवं परिभाषा

इस शोध प्रबंध में शोधार्थी ने प्रथम अध्याय में रागों का अर्थ एवं परिभाषा, रागों का वर्गीकरण, रागों का समय सिद्धांत एवं ऋतुओं के अंतर्गत उन सभी बातों को विस्तार पूर्वक बताया है। जैसे रागों का वर्गीकरण, जाती गायन पद्धति, शुद्ध छायालग और संकीर्ण राग वर्गीकरण, मेल पद्धति, राग-रागिनी पद्धति, शिवमत, कल्लिनाथ मत, भरत मत इत्यादि अनेकों विद्वानों का आधार लिया गया है। साथ ही साथ थाट पद्धति, समयाश्रित राग पद्धति, पूर्व-उत्तर राग पद्धति, स्वर संख्याश्रित पद्धति, राग रागांग पद्धति, षष्ट विलोमी पद्धति, रागों का समय सिद्धांत, पूर्वांग तथा उत्तरांग का नियम, राग एवं ऋतुओं के विषय में विस्तारपूर्वक इस अध्याय में दिया गया है, साथ ही साथ कुछ अपनी बातों को भी इस अध्याय में लिखा गया है।

द्वितीय अध्याय : ऋतु से संबंधित रागों का शास्त्रीय अध्ययन

इस शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय में ऋतु से संबंधित रागें को शास्त्रीय सिद्धांतो के द्वारा समझाया गया है जिसमें वर्षाऋतु के रागों का संक्षिप्त शास्त्रीय अध्ययन साथ ही साथ ऋतुओं के राग एवं उसका शास्त्रीय अध्ययन दिया गया है। इस शोध प्रबंध में सभी रागों का सविस्तार परिचय एवं आरोह-अवरोह शास्त्रीयबद्धता के साथ दिया गया है।

तृतिय अध्याय : बंदिश का अर्थ एवं विभिन्न गायन शैलियों में बंदिशों का संरचनात्मक अध्ययन

इस शोध प्रबंध के तृतिय अध्याय में बंदिश का अर्थ, विभिन्न विद्वानों द्वारा बंदिशों की परिभाषा, रागों के स्वरूप प्रदान करने में बंदिशों की भूमिका, बंदिश रचना हेतु आवश्यक नियम, साथ ही साथ विभिन्न गायन शैलियों में बंदिसों का संरचनात्मक अध्ययन, गायन के प्रकार जैसे ध्रुवपद गायन शैली, उसकी वाणी, ध्रुवपद की संरचना इत्यादी। साथ ही साथ इन सभी बंदिशों का परिचय के साथ-साथ नोटेशन तथा इसमें बजने वाले तालों के विषय में बताया गया है। धमार गायन शैली एवं कुछ होरी के पदों को भी दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय : विभिन्न गायन शैलियों में ऋतु वर्णित बंदिशों का अवलोकन

इस शोध प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में विभिन्न गायन शैलियों में ऋतु वर्णित बंदिशों का अवलोकन किया गया है। साथ ही साथ ध्रुवपद गायन शैली में प्राप्त ऋतु वर्णित बंदिशों को भ दिया गया है। इस अध्याय में रागों का परिचय एवं उनके नोटेशन (स्वरलिपि) उत्तम ढंग से बताइ गइ है।

पंचम अध्याय : उपसंहार

यह एक व्यापक और गहन अध्ययन के माध्यम से ऋतुगेय रागों की संगीतीय अभिव्यक्ति की अद्वितीयता को परिचय करता है। इस अध्याय में ऋतुगेय रागों के हर प्रकार के विभिन्न पहलुओं की खोज की गइ है, जिससे हमें ऋतुगेय राग तथा आधुनिक बंदिशों के महत्वपूर्ण पहलुओं को पाया है और उसकी समझ भी मिली है। इन रागों में सौंदर्य, रचनात्मकता, और साहित्यिकता की अनगिनत राशियाँ मिलती हैं। ऋतुगेय राग अद्वितीय भावनात्मक और मानवीय सांगीतिक भाषा सहित मनोभावों का अतुलनिय प्रतीक है। ऋतुगेय राग रंग में-रागों के सौंदर्य तथा बहुआयामी दृष्टिकोण को अभिव्यक्त किया है। ऋतुगेय राग एवं आधुनिक बंदिशों के विश्लेष्णात्मक अध्ययन शोध प्रबंध में ऋतुगेय रागों के परस्पर संबंध, बंदिशो में निहित विविध प्रकार के भाव तथा रस को भी पाया गया है जो की सामान्य जनमानस को ऋतुओं के संदर्भ में अत्याधिक तथा अतुलनिय रूप से प्रभावित करता है। राग के स्वर समूह, राग के वादी-संवादी, राग का चलन, राग में स्वरों का अल्पत्व-बहुत्व सहित राग के तमाम अन्य पहलुओं की वजह से जनमानस उस राग की प्रकृति एवं ऋतु के प्रभाव से उस ऋतु का अनुभव करता है यह भी इस शोध के अंतर्गत समजने मिला।